पारिभाषिक शब्दावली

'साधारण मानसून' तथा 'अच्छे मानसून'

भारत में पिछले कई वर्षों से औसत वर्षा 88 से.मी. है। जब एक वर्ष में 79 से.मी. से 97 से.मी. वर्षा होती है, तो उसे 'साधारण मानसून' कहते हैं, जबकि 'अच्छे मानसून' का अर्थ केवल साधारण वर्षा से नहीं अपितु निरन्तर समयान्तरालों में होने वाली समान वितरित वर्षा से है।

अलनीनो प्रभाव

अलनीनो (शब्दिक अर्थ 'शिशु ईसा मसीह') एक *गर्मधारा* है, जो कि कभी-कभी दिसम्बर में दक्षिण अमेरिका में पेरू के तट के निकट समुद्र तल की ओर नीचे जाती है। भारतीय अन्वेषक विश्वास करते हैं कि अलनीनो मानसून की तीव्रता एवं उसके काल को प्रभावित करने वाले 16 कारकों में यह एक प्रमुख कारक हैं।

मानसून की अरब सागर शाखा बंगाल की खाड़ी शाखा की अपेक्षा अधिक प्रभावी

मानसून की अरब सागर शाखा बंगाल की खाड़ी शाखा की अपेक्षा अधिक प्रभावी है, क्योंकि अरब सागर का क्षेत्रफल बंगाल की खाड़ी से अधिक है तथा अरब सागर की सभी शाखायें भारत पहुंचती हैं, जबकि बंगाल की खाड़ी की शाखा भारत, मलेशिया, म्यांमार तथा थाइलैंड में विभाजित हो जाती है।

जेट स्ट्रीम

क्षोभमण्डल में 12-13 किमी. ऊँचाई पर वायु 180 किमी./घंटा से भी अधिक गति से चलती है, जेट स्ट्रीम कहलाती है। जेट स्ट्रीम दो प्रकार की होती हैं—पूर्वी तथा पछुआ जेट स्ट्रीम।

अन्तरा ऊष्ण-कटिबन्धीय अभिसरण मण्डल (आई.टी.सी.जेड.)

यह व्यापारिक पवनों तथा उत्तरी और दक्षिणी उष्णकटिबन्धीय सागरीय वायुराशियों का संगामी क्षेत्र है। यह विषुवत वृत्त के लगभग समानान्तर मिलती है लेकिन ऋतु परिवर्तन के साथ तापीय विषुवत वृत्त की ओर उत्तर तथा दक्षिण गति करता रहता है। यह क्षेत्र डोलड्रम भी कहलाता है। यह निम्न दाबीय क्षेत्र है।

बादल का बीजन

बादल का बीजन वर्षा में वृद्धि करने का तरीका है। बादलों में सूक्ष्म कणों के बिखराव से प्राकृतिक क्रिया द्वारा तेजी से बारिश करायी जाती है। बादल का बीजन दो प्रकार का होता है, एक गर्म बादल और दूसरा शीत बादल।

मानसून गर्त

जुलाई में ITCZ लगभग 20-25° अक्षांशों (गंगा के मैदान) में स्थापित हो जाता है, जिसे मानसून गर्त कहते हैं। यह गर्त उत्तरी और उत्तर पश्चिमी भारत में तापीय निम्न वायुदाब विकसित करने में सहायक होता है।

दक्षिणी दोलन

दक्षिणी दोलन प्रशान्त महासागर तथा हिन्द महासागर के ऊपर चलने वाली वायु राशियों का कालिक स्थानान्तरण है। जब उत्तरी प्रशान्त महासागर के उपोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में वायुदाब अधिक होता है, तब दक्षिणी हिन्द महासागर में कम तथा जब उपोष्ण कटिबन्धीय प्रशान्त महासागर में कम तब दक्षिणी हिन्द महासागर में अधिक होता है।

बोर्डोचिल्ला

आसाम और पश्चिम बंगाल में आर्द्र सागरीय पवनों तथा स्थानीय शुष्क पवनों के मिलने से आने वाले स्थानीय तीव्र तूफान को जो जोरदार वर्षा तथा अत्यधिक हानि करते हैं। आसाम में *बोर्डोचिल्ला* कहलाते हैं।

पश्चिमी विक्षोभ

उत्तर-पश्चिम भारत में भूमध्यसागर से आने वाले चक्रवातीय विक्षोभ शीत ऋतु में वर्षा करते हैं तथा रबी की फसल को लाभ पहुंचाते हैं, इन्हें ही पश्चिमी विक्षोभ कहते हैं।

बादलों का फटना

अचानक और तेजी से वर्षा होने को 'बादलों का फटना' कहते हैं। यह स्थानीय संवहनीय तरंगों के ऊपर उठने के कारण आए तूफान के कारण होता है।

चाय वृष्टि

आसाम में *मई* में *नार्वेस्टर* के द्वारा होने वाली वर्षा चाय की खेती के लिए लाभदायक होने के कारण चाय वृष्टि कहलाती है।

काल वैशाखी

बंगाल में गर्म व शुष्क स्थानीय पवनों तथा आर्द्र समुद्री पवनों के मिलने के कारण मूसलाधार वर्षा के साथ तेज गति के स्थानीय तूफान जो जानमाल की भी हानि करते हैं, काल *वैशाखी* कहलाते हैं।

आम्र वृष्टि

अप्रैल-मई में प्रायद्वीपीय भारत में आर्द्र सागरीय पवनों तथा शुष्क गर्म पवनों के मिलने से स्थानीय तूफानी वर्षा तमिलनाडु तथा आन्ध्र प्रदेश में आम कृषि के लिए लाभदायक होने के कारण *आम्रवृष्टि* कहलाती है।

चेरी ब्लॉसम

कर्नाटक क्षेत्र में आर्द्र सागरीय पवनों तथा शुष्क गर्म पवनों के मिलने से अप्रैल-मई में कॉफी के रोपण के लिए उपयोगी स्थानीय तूफान को *चेरी ब्लॉसम* कहते हैं।

नार्वेस्टर

भूमध्य सागर तथा फारस की खाड़ी से कम तीव्रता वाले चक्रवातीय विक्षोभ जो आसाम, उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल में शीत ऋतु में वर्षा करते हैं, नार्वेस्टर कहलाते हैं।

मानसून का टूटना

दक्षिण पश्चिम मानसून द्वारा एक-दो या अधिक सप्ताह तक वर्षा होने के बाद वर्षा का लम्बे समय तक ना होना *मानसून का टूटना* कहलाता है।

फ्लैश फ्लड्स

यह अचानक या बहुत तेजी से आने वाली बाढ़ है, जो सामान्यत: निम्न घाटियों में बादल फटने से घटित होती है। ये मृत या ढके पड़े प्रवाह तन्त्र की पुनर्जीवित कर देता है। ये बाढ़ संकेंद्रित एवं बहुत तेज बहाव (कम समय में बहुत अधिक बहाव) के लिए जानी जाती हैं

जलवर्षा कृषि

भूजल स्तर को उठाने के लिए वर्षा के जल के प्रवाह को रोककर भूजल स्तर के ऊपर उठाने के उपाय को *जलवर्षा कृषि* कहते हैं।

अक्टूबर हीट

यह अक्टूबर महीने में अचानक उत्पन्न होने वाली असहनीय तापीय घटना है, जो लौटते मानसून के तुरन्त बाद उत्पन्न होती है। यह गर्मी के मौसम, जितना गर्म तो नहीं होता लेकिन यह बहुत असहनीय मौसम को जन्म दे देता है।

पठार के प्रकार

पठारों को तीन भागों में बांटा जा सकता है—

(a) अन्त: पर्वतीय पठार (पर्वतों के मध्य)
(b) पर्वत पदीय पठार (पर्वत तथा सागर के मध्य)
(c) महाद्वीपीय पठार (समुद्र तथा समुद्र के मध्य)

भ्रंश घाटी क्या है? भारत की किसी एक भ्रंश घाटी का नाम

भ्रंश घाटी तीव्र ढालों के मध्य निम्न भूमि है, जो भूतात्विक त्रुटि के कारण सतह के टूटने से बनती है। भारत में नर्मदा घाटी एक भ्रंश घाटी है। जिसके एक ओर सतपुड़ा तथा दूसरी ओर विंध्याचल पर्वत हैं।

DOARS (डीप ओशन एसेसमेंट एण्ड रिपोर्टिंग सेंटर)

यह समुद्र में 6 किमी. की गहराई पर स्थापित की जाती है, जिसमें दाबीय सेंसर लगे होते हैं, जो जल के प्रवाह को मापते हैं, ये उपग्रह से जुड़े होते हैं, जो संदेश पृथ्वी तल पर पहुँचाते हैं। इसका उपयोग सुनामी की पूर्व सूचना के लिए किया जाता है।

रिक्टर पैमाना

रिक्टर पैमाना भूकम्प की तीव्रता मापता है, यह एक मानक सिस्मोमीटर की सहायता से झटके की अधिकतम तीव्रता बताता है। यह पैमाना भूकम्प से निकली सिस्मिक ऊर्जा को भी बताता है।

सुनामी

सागरीय तल की भूतात्विक हलचलों के कारण आने वाली सागरीय तरंगों की शृंखला को *सुनामी* कहते हैं। उन्हें रोका नहीं जा सकता, यह महासागरों में हजारों किमी. सफर तय कर सकती हैं।

पारिस्थितिकीय सूखा

जब प्राकृतिक पारिस्थितिकी की उत्पादकता बंद हो जाती है, तो इसके परिणामस्वरूप पृथ्वी पर बहुत अधिक संख्या में पशुओं, वन जीवों का नष्ट होना तथा वनों एवं वनस्पतियों का सूखना आरम्भ हो जाता है। इस घटना को *पारिस्थितिकीय सूखा* कहते हैं।

पूर्वांचल पहाड़ियाँ

मेघालय तथा मिजोरम में स्थित गारो, खासी, जयन्तिया तथा मिकरी पर्वतों को जो दक्षिण पूर्वी हिमालय के भाग हैं, *पूर्वांचल पहाड़ियाँ* कहते हैं।

प्रायद्वीपीय नदियाँ

प्रायद्वीपीय नदियाँ ऋतुवाहिनी तथा निश्चित दिशा में प्रवाह वाली हैं, इनके मार्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

विषुव

जब सूर्य की किरणें सीधी विषुवत वृत्त पर पड़ती हैं तो दिन और रात बराबर होते हैं, इसे ही *विषुव* कहते हैं। 21 मार्च को **बसंत विषुव** तथा 23 सितम्बर को **शरद विषुव** कहते हैं।

रोही एवं भिट

बांगर क्षेत्रों में उपजाऊ भूमि को *रोही* तथा कुछ उर्ध्वाधर मिट्टी के स्तूप साधारण अवस्था में पाये जाते हैं, जिन्हें क्षेत्रीय भाषा में *भिट* के नाम से जाना जाता है।

प्रवाल रोधिका

यह प्रवाल भित्ति उन सभी प्रवाल भित्तियों से बड़ी है, जो प्रवाल भित्तियाँ तट से जुड़ी या द्वीप से जुड़ी हुयी, लैगून बनाने वाली और मुख्य सागरों को जोड़ने वाली प्रवाल भित्तियाँ होती हैं।

प्रवाल भित्ति

प्रवाल भित्ति उष्णकटिबन्धीय सागरीय पारिस्थितिक तंत्र का छिछला जल है, जिसकी विशेषता अत्यधिक मात्रा में जैविक पदार्थों का उत्पादन तथा समुद्री जीवों की अत्यधिक विविधता है।

तटीय प्रवाल भित्ति

इसमें प्रवाल बिना लैगून बनाये तट से जुड़े होते हैं, यह प्रवाल भित्ति की सबसे सामान्य अवस्था है।

प्रवाल द्वीप वलम (एटॉल)

प्रवालों का वृत्तीय आयोजन जिसके मध्य साधारणतया द्वीप का अभाव होता है, प्रवाल के किनारों पर ताड़ वृक्ष पाये जाते हैं।

लू (Loo)

मई-जून के महीने में उत्तर-पश्चिम भारत में चलने वाली शुष्क धूल भरी हवा को *लू* कहते हैं, यह उत्तरी भारत की गर्मी को और अधिक कष्टप्रद बना देती है।

हिमानी

एक विस्तृत क्षेत्र पर बर्फ से ढका क्षेत्र जो गुरुत्व के प्रभाव के कारण नीचे की तरफ ढलान को दर्शाता है तथा नेव एवं फिन के पुनः क्रिस्टलीकरण के फलस्वरूप बनता है, हिमानी कहलाता है।

संक्रान्ति

सूर्य के उत्तरायन तथा दक्षिणायन की सीमा को संक्रान्ति कहते हैं। कर्क *संक्रान्ति* के समय उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर होता है तथा मकर संक्रान्ति के समय दक्षिणी गोलार्द्ध।

भूमण्डलीयतापन

मानव द्वारा की गयी क्रियाओं द्वारा हुए पर्यावरणीय नुकसान तथा छोड़ी गयी अनिष्ट गैसों से पृथ्वी वायुमण्डल का तापमान निरन्तर वृद्धि कर रहा है, इसे *भूमण्डलीय* तापन कहते हैं। इसके प्रभाव से हिमानियों के पिघलने से सागर तल ऊपर उठता जा रहा है।

दक्कन ट्रेप

मेसेजोइक काल के अन्त में ज्वालामुखी विस्फोट के कारण महाराष्ट्र तथा दक्कन का भाग लावा से ढक गया। ज्वालामुखी चट्टानों में लावा के मध्य पतली अवसादी परते हैं। यह भाग दक्कन *ट्रेप* कहलाता है।

तराई

तराई पर्वत पादीय मैदान है जिसमें नदी द्वारा लाये गये मोटे गाद तथा नदी द्वारा पहले लाये गये महीन गाद के कण होते हैं, पादीय मैदान का बीमारी मुक्त दक्षिण भाग *तराई* कहलाता है। उत्तर की गायब हुई नदियाँ यहाँ पर फिर से सतह पर दिखायी पड़ने लगती हैं।

ऐश्चुरी

नदी का मुहाना जहाँ ज्वार का *खारा पानी* तथा नदी का *ताज़ा जल* मिलता है, *एश्चुरी* कहलाता है। ऐश्चुरी में नदी द्वारा लाये गये गाद की अधिकता होती है।

लैगून

यह छिछले पानी से भरा क्षेत्र है, जो समुद्र से संकरे स्थल द्वारा अलग होता है।

महासागरीय धारायें

महासागर के सतही जल का निश्चित दिशा में सामान्य गति से प्रवाह महासागरीय धारा कहलाता है अर्थात् महासागरीय जल का लगातार क्षैतिज प्रवाह।

अलविडो

सूर्य की ऊर्जा को परावर्तित करने वाली सतह की क्षमता को अलविडो कहते हैं, कुछ सतहें सूर्य की ऊर्जा को परावर्तित करती हैं तथा अन्य उपायों की अपेक्षा वायु के अधिक गर्म कर देती हैं।

पूर्ववर्ती अपवाह

भूगर्भिक परिवर्तनों के होने से पूर्व की नदी के अपवाह को पूर्ववर्ती अपवाह कहते हैं अर्थात् इन स्थानों में नदियां पहाड़ों से भी पुरानी होती हैं।

चक्रवात

कम भू-दाब क्षेत्र का तंत्र जिसमें बेरोमेट्रिक प्रवणता तीव्र ढाल वाली होती है, उत्तरी गोलार्द्ध में पवनें अन्दर की ओर चलते हुये दक्षिणावर्त दिशा में तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में वामावर्त दिशा में चलती हैं।

सूखा ग्रस्त क्षेत्र

75 से.मी. से कम वर्षा वाला शुष्क क्षेत्र जहाँ वर्षा की मात्रा में औसत वार्षिक वर्षा से 25% कमी हो जाती है, सूखा ग्रस्त क्षेत्र कहलाता है। उदाहरण : गुजरात, राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश आदि के क्षेत्र।

याजू नदी

नदी जो मुख्य नदी के समानान्तर बहती है लेकिन वह मुख्य नदी से जुड़ नहीं पाती है *याजू नदी* कहलाती है।

बायोमास

बायोमास गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोत है, जो कम प्रदूषण करता है। बायोगैस जैव ईंधन बनाने में प्रयुक्त होता है जो विद्युत, यांत्रिक तथा *तापीय ऊर्जा* उत्पन्न करते हैं।

'ग्रीन एकाउंटिंग'

आर्थिक निर्णय द्वारा पर्यावरणीय मूल्यों तथा पर्यावरणीय लाभों को संवर्धित करने का तरीका है। इसे *प्राकृतिक संसाधन एकाउंटिंग* भी कहते हैं।

भारत के शुष्क क्षेत्र

उष्ण कटिबन्धीय मरुस्थलीय क्षेत्र मुख्यतः बालू के बने मैदान हैं, जहाँ ग्रीष्म काल में तापमान 45°C से अधिक व शीत काल में 12°C से कम चला जाता है, तब वर्षा कम तथा अनिश्चितता भरी होती है, *शुष्क क्षेत्र* कहलाते हैं। शुष्क क्षेत्र पश्चिमी राजस्थान तथा कच्छ का रन क्षेत्र हैं।

कमाण्ड एरिया डेवलपमेण्ट

कमाण्ड एरिया डेवलपमेण्ट कार्यक्रम केन्द्र सरकार द्वारा 1974-75 में सिंचाई के बड़े तथा मध्यम आकार की परियोजनाओं के लिए प्रारम्भ की गई एक योजना है।

पूर्वी तट तथा पश्चिमी तट

पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा है पूर्वी महाद्वीपीय *छज्जा* गंगा ब्रह्मपुत्र के दक्षिण तथा तमिलनाडु तथा श्रीलंका के मध्य भाग को छोड़कर पश्चिमी महाद्वीपीय *छज्जे* से कम चौड़ा (संकरा) है।

पूर्वी तटीय मैदान

पूर्वी घाट तथा बंगाल की खाड़ी के मध्य स्थित पूर्वी तटीय मैदान समुद्री समीर, आरामदायक हवा के झोकों, बालू के तट तथा लैगूनों जैसी विशेषताओं से परिपूर्ण है।

पश्चिमी तटीय मैदान

पश्चिमी घाट तथा अरब सागर के मध्य स्थित पश्चिम तटीय मैदान समुद्र में डूबा हुआ तट है। ढाल के कारण नदियों के अवसादों का अभाव है।

जोजिला दर्रा

जम्मू-कश्मीर की जास्कर श्रेणी में स्थित जोजिला दर्रा *लेह व श्रीनगर* को जोड़ता है।

काराकोरम दर्रा

काराकोरम दर्रा जम्मू-कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में भारत का सबसे ऊँचा दर्रा है, जो भारत तथा चीन को जोड़ता है।

जल विभाजक

जल विभाजक वह सीमा रेखा है, जो मुख्य नदी को अन्य नदी की सहायक नदियों से पृथक करती है।

ओज़ोन

वायुमण्डल में बहुत कम मात्रा में पायी जाने वाली, धुंधले नीले रंग की, गैस जो ऑक्सीजन का विशिष्ट प्रकार है (O_3)। साधारणतया यह वायुमण्डल में 10-60 किमी. ऊँचाई पर तथा सबसे अधिक सान्द्रता 22-25 किमी. ऊँचाई पर होती है।

वन क्षेत्र तथा वनाच्छादित क्षेत्र

वन क्षेत्र वह क्षेत्र है, जो वन भूमि के लिए चिह्नित एवं आंकलित है। इस बात पर ध्यान दिये बिना कि वहाँ वन है अथवा नहीं। जबकि वनाच्छादित क्षेत्र वह क्षेत्र है, जहाँ वास्तव में वन है। वन क्षेत्र राज्य की आंकलित आय पर आधारित हैं जबकि वनाच्छादित क्षेत्र वायवीय चित्र तथा सेटेलाइट से प्राप्त तस्वीरों पर आधारित है।

मैंग्रोव

मैंग्रोव वे वृक्ष हैं, जो उच्च लवणता, ऊँचे ज्वार, तेज हवाओं, अधिक तापमान और दलदली लवणीय भूमि जैसी असहनीय स्थिति में भी रह सकते हैं।

भारत में शोला वन क्षेत्र

सदाबहार शोला वन केरल, तमिलनाडु तथा कर्नाटक के *नीलगिरि, अन्नामलाई और पालनी* पहाड़ी क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

राष्ट्रीय उद्यान

विस्तृत क्षेत्र जहाँ, एक या अधिक पारिस्थितिक तंत्र होते हैं और विशेष शिक्षा तथा पुनः उत्पत्ति के लिए पौधों और पशुओं की प्रजातियों भू-आकृतियों, कीटों, जन्तु तथा पौधों का संरक्षण किया जाता है।

वन्यजीव अभ्यारण्य

वह वन क्षेत्र जो वन्यजीव की प्रजातियों के बचाव के लिए आरक्षित है, वन्यजीव अभ्यारण्य कहलाते हैं।

राष्ट्रीय उद्यान तथा वन्यजीव अभ्यारण्य

राष्ट्रीय उद्यान अपेक्षाकृत विस्तृत क्षेत्र, अनेक पारिस्थितिक तंत्र से मुक्त मानवीय क्रियाओं के हस्तक्षेप से मुक्त क्षेत्र है। यहाँ विशेष वैज्ञानिक शिक्षा और पुनः उत्पत्ति के लिए पौधों और पशुओं की प्रजातियों, भू-आकृतियों, कीट, जन्तु एवं पौधों को बचाया जाता है।

वन्यजीव अभ्यारण्य राष्ट्रीय उद्यान जैसे ही होते हैं लेकिन यह वन्यजीव या विशेष प्रजाति के संरक्षण हेतु कटिबद्ध होते हैं।

शस्य गहनता तथा शस्य परावर्तन

शस्य गहनता एक वर्ष में एक निश्चित भूमि पर पैदा की जाने वाली फसलों की संख्या है। जबकि शस्य परावर्तन मिट्टी की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए विभिन्न फसलों की एक के बाद एक बोयी जाने वाली फसलों की संख्या है।

परती भूमि तथा कृषि अनुपयोगी भूमि

वह कृषि योग्य भूमि जो कम से कम एक वर्ष तथा अधिक से अधिक 5 वर्ष न जोती गयी हो परती भूमि कहलाती है। वह कृषियोग्य भूमि जो 5 वर्षों से अधिक समय से न जोती गयी हो, कृषि अनुपयोग भूमि कहलाती है।

सेतुसमुन्दरम् जहाजीय नहर योजना

जुलाई, 05 में शुरू यह योजना 'धोनी धुराई' प्रायद्वीप को खोदकर बंगाल की खाड़ी से पाक की खाड़ी होते हुये हिन्द महासागर से जहाजीय सुरक्षा तथा आर्थिक उन्नति में विशेष योगदान देने हेतु प्रस्तावित की गयी है।

नदियों का जोड़ना नदी जुड़ाव योजना

इस योजना का विचार 50 वर्ष पूर्व डॉ. के.एस. राव द्वारा दिया गया। 1982 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय जल विकास संगठन (NWDA) स्थापित कर पिछले 25 वर्षों से अन्तः बेसिन जल के एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवाह के लिए अध्ययन शुरू किया है।

बहुउद्देश्यीय नदी परियोजना

वे योजना जो बड़ी नदियों पर बांध बनाकर नदियों की क्षमता का उपयोग करती हैं तथा जिनका उद्देश्य सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण जल विद्युत उत्पाद संयंत्र, वानिकी तथा जल परिवहन सुविधाएँ जैसे अनेक उद्देश्य हैं।

स्थायी नहर एवं बाढ़ीय नहर

वे नहरें जो स्थायी नदियों से निकाली जाती हैं तथा जिसमें पानी के बहाव की आवश्यकतानुसार नियंत्रित करने का यंत्र लगा हो, स्थायी नहरें कहलाती हैं। बाढ़ीय नहरों में बहाव को नियंत्रित करने का कोई यंत्र नहीं लगा होता

और यह तभी सक्रिय होती हैं, जब नदी का अत्यधिक पानी इनमें छोड़ दिया जाता है।

शुष्कभूमि कृषि

वह कृषि जो 75 से.मी. से कम वर्षा क्षेत्र में सिंचाई पूर्णत: वर्षा पर निर्भर रहकर की जाती है। शुष्क भूमि कृषि कहलाती है। इसका मुख्य ध्यान भूमि के विकास, मृदा की आर्द्रता तथा पैदावार में बढ़ोत्तरी पर रहता है।

शुष्क भूमि कृषि की उपयोगिता

भारत में कुल कृषि क्षेत्र में अधिक वृद्धि नहीं की जा सकती अत: कृषि पैदावार को बढ़ाने के लिए कृषि के तरीकों में विकास तथा जल प्रबन्धन उपायों द्वारा शुष्क भूमि कृषि का उपयोग किया जा सकता है।

आदमपुल

धानुशकोडी (तमिलनाडु) तथा ताताइमन्नार (श्रीलंका) के मध्य डूबे स्टॉल को आदमपुल कहते हैं। यह भारत तथा श्रीलंका को जोड़ने वाला काल्पनिक पुल है।

पम्बन पुल

1913 में रामेश्वर को मुख्य भूमि से जोड़ने के लिए पाक की खाड़ी को पार करते हुये बनाया गया सबसे लम्बा और सबसे पुराना रेलवे पुल है। श्हेरजर एडम का इसके प्रारूप तथा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान होने के कारण उनके नाम पर इसका नाम पड़ा। पुल की प्रमुख विशेषता यह है, कि जहाज आगमन पर पुल को खोला जा सकता है।

कृषि अनुपयोग भूमि

भारी मात्रा में जल भराव तथा अत्यधिक मृदा अपरदन के कारण इस को कृषि अनुपयोगी भूमि कहते हैं। उचित भूमि प्रबन्धन द्वारा इसे कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

भारत के प्रमुख कृषि अनुपयोगी क्षेत्र

कृषि अनुपयोगी क्षेत्र राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, जम्मू कश्मीर तथा उत्तरपूर्वी क्षेत्र हैं।

अपवाह क्षेत्र

एक भूगर्भिक जल इकाई या जमीन का भाग जो जल का बहाव एक निश्चित जलीय मार्ग द्वारा करता है, अपवाह क्षेत्र कहलाता है।

अपवाह क्षेत्र प्रबन्धन

अपवाह क्षेत्र सीमारेखा से घिरा वह क्षेत्र है जो विभिन्न नदी तंत्र को अलग करता है। अपवाह क्षेत्र प्रबन्धन को उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि नदी तंत्र का क्षरण किये बिना उसके सम्पूर्ण जल का उपयोग किया जा सके।

आर्द्र भूमि

वर्षा के कुछ समय जल भराव के कारण विशेष पारिस्थितिक तंत्र क्षेत्र को आर्द्र भूमि कहते हैं, आर्द्र भूमि का पक्षियों के लिए शरण स्थल, पक्षी की नमी प्रजातियों और शरणार्थी पक्षियों के लिए आवास में प्रमुख योगदान है।

कमडिस

कमडिस तैरता हुआ द्वीप है, जो विभिन्न सब्जियों तथा जैविक पदार्थों के असान्द्र भार का एकत्रण विभिन्न स्तर पर करता है।

प्लाया

समतल सतह और अनप्रवाहित द्रोणी वाली छोटी झील जिनमें वर्षा का जल जल्दी भाप बनकर उड़ जाता है, वे प्लाया कहलाती है। उदाहरणार्थ डीडवाना, कुचमन, सरगोल और खात् झील।

बॉलसन

पहाड़ियों से घिरे अभिकेन्द्रीय अपवाह वाले विस्तृत समतल गर्त को बॉलसन कहते हैं। उदाहरण : सांभर झील (राजस्थान)।

पुलीकट झील

कोरोमण्डल तट पर तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश की सीमा पर स्थित भारत की दूसरी सबसे बड़ी अन्त: सागरीय झील जो पारिस्थितिक तंत्र तथा जलचर पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है। श्री हरिकोटा का प्रवालद्वीप पुलीकट झील को बंगाल की खाड़ी से अलग करता है।

कोलेरू झील

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुये रामसर सम्मेलन में घोषित आर्द्र क्षेत्र जो आंध्र प्रदेश में स्थित ताजे पानी की झील है। इसे वन्यजीव अभ्यारण्य में शामिल किया जा चुका है।

लोकटक झील

मणिपुर में स्थित झील जिसे रामसर सम्मेलन में आर्द्र भूमि क्षेत्र घोषित किया गया। यह झील जलशक्ति ऊर्जा, सिंचाई तथा पीने योग्य पानी का भी स्रोत है।

जयसमन्द झील

यह राजस्थान में स्थित विश्व की दूसरी सबसे बड़ी कृत्रिम झील है। इस झील में सात द्वीप हैं, इसे ढेबर झील के नाम से भी जाना जाता है।

सांभर झील

रामसर सम्मेलन में घोषित आर्द्र भूमि क्षेत्र है। यह राजस्थान में स्थित भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यह झील शीत ऋतु में उत्तरी एशिया से आये पक्षियों को आवास प्रदान करती है।

वेम्बनाद झील

रामसर सम्मेलन में घोषित आर्द्र भूमि क्षेत्र है। यह केरल की सबसे बड़ी झील है। इस झील में प्रत्येक वर्ष वल्लाक्कली (नाव प्रतियोगिता) आयोजित की जाती है।

वुलर झील

यह विवर्तनीक क्रियाओं के द्वारा बनी गोखुर झील है। जम्मू-कश्मीर में तुलबुल नाव योजना इसी झील पर है।

त्सो मोरिरी

त्सो मोरिरी झील चीन के बाहर स्थिति एकमात्र झील है, जो क्षतियुक्त सागर की पालन जगह है, यह जम्मू एवं कश्मीर राज्य में स्थित है।

अस्थामुदी

अस्थामुदी केरल का दूसरा सबसे बड़ा एश्चुरी तंत्र एवं आर्द्र भूमि क्षेत्र है, यह मैंग्रोव वृक्षों के लिए अनुकूल क्षेत्र है, यह कोल्लम जिले को जलपूर्ति के लिए मार्ग प्रदान करती है।

केबुललामजाओ

मणिपुर की लोकटक झील में स्थित एक छोटा द्वीप क्षेत्र विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है।

गोविन्द वल्लभ पन्त सागर

उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित रिहन्द बांध के निकट भारत की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है।

बैरन द्वीप

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह (बंगाल की खाड़ी) में स्थित लावा शंकु व राख के ढेर से निर्मित ज्वालामुखी द्वीप है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि भारत के सक्रिय ज्वालामुखी अंडमान निकोबार द्वीप समूह में पड़ते है।

पम्बन द्वीप

पम्बन द्वीप पाक जलसंधि में स्थित दक्षिण भारत के प्रायद्वीपीय भाग का उत्क्रमण है।

फरक्का बैराज

फरक्का बैराज योजना फरक्का में गंगा तथा चांगीपुर में भागीरथी नदी पर बनायी गयी है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य कोलकाता बन्दरगाह की सुरक्षा तथा ब्रह्मपुत्र, हुगली नदी तंत्र को जल परिवहन योग्य बनाना तथा कोलकाता शहर को पीने योग्य पानी देना है।

वभाली बैराज

महाराष्ट्र द्वारा गोदावरी नदी पर वभाली बैराज बनाया जा रहा है, जिसका विरोध आन्ध्र प्रदेश कर रहा है।

इंदिरा गांधी नहर

इसे *राजस्थान नहर* भी कहते हैं, सतलुज, व्यास के संगम पर स्थित हरीका बोध से नहर को पानी दिया जाता है, जो राजस्थान के मरुस्थलीय भाग में कृषि में प्रयुक्त होता है।

टिहरी परियोजना

टिहरी परियोजना विश्व की सबसे ऊँची *चट्टान निर्मित बांध परियोजना* है, जो भागीरथी तथा भीलगांना नदियों पर स्थित है। यह बहुउद्देश्यीय बांध परियोजना है।

पोंग बांध

मध्य प्रदेश में स्थित पोंग परियोजना जलीय संसाधन के लिए महत्वपूर्ण है। जल नियंत्रण पुनः भूजलस्तर में वृद्धि, मृदा संरक्षण तथा मृदा कटाव को रोकना इसका मुख्य उद्देश्य है।

हीराकुण्ड बांध

उड़ीसा के सम्भलपुर के निकट महानदी की मुख्य धारा पर बना *यह बांध विश्व का सबसे बड़ा बांध है।* यह उड़ीसा के अनुपयोगी क्षेत्र की सिंचाई तथा बिजली उत्पादन करता है। इसके द्वारा जल परिवहन सुविधाओं का विकास, बाढ़ नियंत्रण, वृक्षारोपण में वृद्धि और मृदा संरक्षण भी होता है।

इंदिरा सागर परियोजना

यह रावी, व्यास, सतलुज नदियों से राजस्थान के 13 लाख हेक्टेयर की कृषि करने के लिए परियोजना है।

तुंगभद्रा परियोजना

आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक का संयुक्त उपक्रम है। इसमें 49.39 मी. ऊँचा बांध मल्लापुरम में *तुंगभद्रा* नदी पर बनाया गया है। इससे निकली 227 किमी. लम्बी नदी को बायें किनारे नहर 349 किमी. लम्बी नहर को *निम्न स्तरीय* नहर तथा दायें किनारे पर 198 किमी. लम्बी नहर को उच्च *स्तरीय नहर* कहते हैं। इसमें 2 विद्युत संयंत्र है।

चंबल परियोजना

राजस्थान तथा मध्य प्रदेश का संयुक्त उपक्रम है। गांधी सागर बांध, गांधी सागर विद्युत संयंत्र, कोटा बैराज, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर बांध इसी परियोजना के भाग हैं। चौरासीगढ़ तथा मेटा इसमें 122 मी. ऊँचे जलस्तर का उपयोग किया जाता है।

सरिस्का वन्यजीव अभ्यारण्य

राजस्थान में स्थित सरिस्का वन्यजीव अभ्यारण्य को 1958 में वन्यजीव अभ्यारण्य घोषित किया गया और 1974 में बाघ संरक्षण योजना के अंतर्गत इसे बाघ संरक्षण योजना के अन्तर्गत इसे बाघ संरक्षण क्षेत्र घोषित किया गया है।

पेरियार वन्यजीव अभ्यारण्य

केरल में स्थित पेरियार वन्यजीव अभ्यारण्य हाथियों की संख्या के लिए प्रसिद्ध है। अभ्यारण्य में पाये जाने वाले अन्य वन्यजीव जंगली कुत्ता, नीलगिरि लंगूर, गैंडा तथा कछुआ हैं।

ईंधन खनिज

खनिज जो ऊर्जा उत्पन्न करते हैं, ईंधन खनिज कहलाते हैं। जैसे कोयला, पेट्रोलियम, लिग्नाइट, यूरेनियम, थोरियम आदि।

नाभिकीय ऊर्जा उत्पन्न करने वाले खनिज

नाभिकीय ऊर्जा उत्पन्न करने वाले खनिज यूरेनियम तथा थोरियम हैं। भारत में थोरियम मोनाजाइट / इमेहाइट बालू द्वारा पश्चिमी घाट में प्रमुखतया केरल में तथा यूरेनियम बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में पाया जाता हैं।

नाभिकीय ऊर्जा उत्पादन में भारी पानी

भारी जल डयूटीरियम ऑक्साइड (D_2O) साधारण जल से अधिक घनत्व का होता है। नाभिकीय ऊर्जा उत्पादन में दाबित भारी जल रिएक्टर में भारी जल शीतलक तथा मंदक का कार्य करता है।

भौगोलिक सूचना तंत्र (G.I.S.)

यह एक कम्प्यूटर तंत्र है जो आंकड़ों को इकट्ठा करने, गणना करने तथा भौगोलिक सन्दर्भ में सूचनायें प्रदान करता है तथा सूचना विकास के सम्वर्द्धन कार्यों में उपयोगी होता है। सरकारी कृषि संस्थायें G.I.S. के सहयोग से ग्रामीण जीवन की देख-रेख करते हैं। G.I.S. किसानों को विभिन्न अवसर प्रदान करते हैं जिससे वे उत्पादन बढ़ा सकते हैं, लागत घटा सकते हैं तथा भूमि का पूर्ण उपयोग कर संवर्द्धन में मदद करते हैं।

सुदूर संवेदन

यह सूचना एकत्र करने की युक्ति है, जो किसी वस्तु या क्षेत्र के बिना सम्पर्क में आये सूचना उपलब्ध कराती है। यह कार्य वायवीय फोटोग्राफी द्वारा होता है। यह विधि सूर्य के विद्युत चुम्बकीय विकरण पर आधारित होता है। इससे एकत्रित आंकड़ों का उपयोग कृषि में फसलों के उत्पादन और फसलों की रोगों से देख-भाल एवं फसल सुरक्षा के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय वन कार्यान्वयन योजना

यह एक विस्तृत रणनीतिक नीति है जिसे 1999 में लाया गया था जो राष्ट्रीय वन नीति, 1988 की समस्याओं से अवगत कराने के लिए लायी गयी थी।

भारतीय राष्ट्रीय जलमार्ग

संख्या की दृष्टि से यह चार हैं। राष्ट्रीय जलमार्ग 'इनलैण्ड वाटरवेज ऑथॉरिटी ऑफ इंडिया' द्वारा विकसित किये जाते हैं। इसमें इलाहाबाद से हल्दिया के मध्य गंगा नदी, सदिया से दुवरी के मध्य ब्रह्मपुत्र नदी में तथा चम्पकेश्वर उद्योग मण्डल नहर के साथ पश्चिमी घाट नहर कोल्लम तथा कोट्टापुरम के मध्य जलमार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया है।

मध्य एशियाई वायुमार्ग

मध्य एशियाई वायुमार्ग यूरेशिया के एक बड़े महाद्वीपीय क्षेत्र को घेरता है, जो आर्कटिक और हिन्दमहासागर के मध्य है। यह वायुमार्ग प्रवासी पक्षियों के द्वारा विभिन्न मौसम में गमन के लिए उपयोग किया जाता है।

स्वर्णिम चतुर्भुज

राष्ट्रीय एक्सप्रेस राजमार्ग तंत्र द्वारा दिल्ली, मुम्बई, चैन्नई, कोलकाता को 4 या 6 लेनों की सड़कों द्वारा जोड़ने वाला राजमार्ग *स्वर्णिम चतुर्भुज* कहलाता है।

बन्दरगाह और पत्तन

बन्दरगाह आंशिक रूप से समुद्र घिरे हुये क्षेत्र को कहते हैं जैसे क्रीक, एश्चुरी, अन्त: सागर जिसमें तैरने वाले पोत शरण ले सकें। जबकि पत्तन बन्दरगाह होते हुये जहाज रखने की सुविधा, तथा जहाजों से आवागमन के लिए परिवहन तंत्र का भी विकास होता है। बन्दरगाह प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों हो सकते हैं जबकि पत्तन हमेशा कृत्रिम रूप से बन्दरगाहों के चारों ओर बनाये जाते हैं।

वृहत्त तथा लघु बन्दरगाह

वृहत्त बन्दरगाह वे हैं जो 400 टन या अधिक क्षमता वाले कार्गो जहाजों से माल की ढुलाई करने की क्षमता रखते हैं तथा जिनका नियंत्रण पत्तन प्राधिकरण या केन्द्रीय सरकार के हाथ में है। अन्य सभी लघु बन्दरगाह हैं।

पोर्ट ऑफ काल

ये वे बन्दरगाह हैं जिन्हें मुख्य समुद्री मार्गों के मध्य स्थापित किया जाता है, जिनका उद्देश्य समुद्र के बीच ईंधन, जल तथा भोजन के संग्रहण के रूप में किया जाता है। जैसे सिंगापुर, होनूलूलू एवं अदन।

दक्षिण गंगा

गोदावरी नदी को दक्षिण की गंगा कहा जाता है। यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लम्बी व पवित्र नदी है। इसी महत्व के कारण वहाँ के लोग इसे दक्षिण की गंगा कहते हैं।

होज (CHHOS)

उत्तरी पंजाब, हरियाणा मैदान जो शिवालिक से सटे हैं, बहुत ही तीव्र अवनालिका अपरदन से ग्रसित हैं, इन्हीं अवनलिकाओं के जाल को *होज* कहते हैं।

सौर्य संयंत्र

सौर संयंत्र सौर ऊर्जा के सीधे अवशोषण द्वारा संचालित होता है जिसमें परावर्तित दर्पणों के उपयोग से सौर विकिरण को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है।

HBJ पाइपलाइन

HBJ पाइपलाइन प्राकृतिक गैस को हजीरा (गुजरात) से जगदीशपुर (उत्तर प्रदेश) वाया बीजापुर (मध्य प्रदेश) ले जाने वाली पाइपलाइन है। इस गैस का उपयोग उर्वरक तथा तापीय संयंत्रों के लिए किया जाता है।

सागर सम्राट

यह प्रथम अपतटीय पेट्रोलियम खनन के लिए प्लेटफार्म है, जिसे *भारत ने जापान* से लेकर *बाम्बे हाई* में पेट्रोलियम खनन में उपयोग किया है।

मैत्री एवं दक्षिणी गंगोत्री

यह भारत द्वारा अंटाकर्टिका में स्थापित स्थायी अनुसंधान केन्द्र हैं। दक्षिण गंगोत्री भारत का पहला केन्द्र था, जबकि *मैत्री बाद* में स्थापित किया गया।

झूम कृषि तथा स्थायी कृषि

झूम कृषि वह कृषि होती है, जो प्राथमिक या द्वितीयक वनों को साफ कर तथा जलाकर सम्पादित की जाती है, जबकि स्थायी कृषि वह कृषि होती है, जिसमें स्थायी किसान किसी एक ही स्थान पर कृषि करते रहते हैं।

गहन एवं विस्तृत कृषि

गहन कृषि छोटे क्षेत्रों तथा उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों में पायी जाती है। दो, तीन या कभी-कभी चार फसल एक साल में उगायी जाती है। जबकि विस्तृत कृषि बड़े क्षेत्रों में मशीनों द्वारा की जाती है।

पट्टीदार कृषि

पट्टीदार कृषि मृदा अपरदन रोकने के लिए की जाती है। जिसके अंतर्गत फसल पतली या सकरी पट्टियों में ढलानों पर की जाती है।

खाद्य फसल एवं व्यापारिक फसल

खाद्य फसल लोगों के खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उगायी जाती है, जबकि व्यापारिक फसल व्यापारिक उद्देश्यों जिनमें अर्द्ध निर्मित खाद्य पदार्थों को आर्थिक स्थिति के सुधार के लिए बेच दिया जाता है।

जैव उर्वरक

विभिन्न जीवों तथा पौधों की जातियों का उपयोग मिट्टी की उत्पादकता बढ़ाने के लिए किया जाता है, जिसे जैव उर्वरक कहते है। उदाहरण: नीले हरे शैवाल, एजिटोवेटर, आदि।

हरित उर्वरक

दो फसलों के उगाये जाने वाले समय के मध्य कुछ ऐसे पौधों का उगाया जाना, जिनका पूर्ण उद्देश्य मृदा अपरदन को रोकना तथा मृदा उत्पादकता को बढ़ाना होता है। इसे ही हरित उर्वरक कहते हैं।

कार्बनिक कृषि

कार्बनिक कृषि प्राकृतिक होती है, जो खेतों के न जोतने के सिद्धान्त पर आधारित होती है, जिसमें किसी उर्वरक या खाद और रोग निवारक का उपयोग नहीं किया जाता है। इसमें निराई-गुडाई का काम नहीं होता है। इसमें केवल फसल को बोने और काटने का कार्य तथा मिट्टी की उर्वरकता बढ़ाने का कार्य जैविक अवशेषों द्वारा किया जाता है।

सवंर्धन कृषि

क्रमिक कृषि के अतिरिक्त एक और गहन कृषि जिसे '*संवर्धन कृषि*' कहते हैं, जिसमें केवल एक ही फसल को एक समय में उगाया जाता है।

ड्रिप सिंचाई

इस विधि में जल का उपयोग बहुत ही मितव्ययता पूर्वक किया जाता है इसकी शुरुआत इजराइल में हुई थी। यह सिंचाई की ऐसी विधि है, जिसमें जल को बूंदों के रूप में धीरे-धीरे छिड़का जाता है जिससे जल की क्षति कम से कम होती है और जल भूतल में ज्यादा गहराई तक जाने से बचा लिया जाता है।

बायोम

यह पौधों एवं जन्तुओं का ऐसा संयोजन एवं एकत्रीकरण है जो उपमहाद्वीपीय स्तर पर एक क्षेत्रीय पारिस्थितिक इकाई का निर्माण करता है। बायोम वितरण स्थलाकृति तथा जलवायु द्वारा नियंत्रित होता है।

जैव संरक्षण केन्द्र

जैव संरक्षण केन्द्र वे स्थलीय एवं तटीय पारिस्थितिक तंत्र होते हैं, जो यूनेस्को के मैन एवं बायोस्फीयर प्रोग्राम (M.A.B.) के अन्तर्गत निर्धारित किये जाते हैं।

जैव विविधता

किसी पारिस्थितिक तंत्र में पाये जाने वाले जीवों की विविधता को जैव विविधता कहते हैं। किसी भी पारिस्थितिक क्षेत्र में जितनी ज्यादा विविध जीवों की संख्या होती है उसकी जैव विविधता उतनी ही ज्यादा होती है।

नगरीय उपान्त

किसी नगरीय क्षेत्र के चारों ओर वह क्षेत्र जिसमें भूमि उपयोग बदलता जाता है। (ग्रामीण से शहरी) तथा भूमि की कीमत एवं जनसंख्या घनत्व भी बढ़ता जाता है। नगरीय उपान्त कहलाते हैं।

टेक्नोपोल्स

जब किसी क्षेत्र का विकास योजनाबद्ध तरीके से वहाँ के उद्योग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पार्क और अन्य उच्चस्तरीय औद्योगिक संकेन्द्रों के विकास के लिए किया जाता है, तब उस स्थान को टेक्नोपोल्स कहते हैं।

पारिस्थितिक शहर

पारिस्थितिक शहर वे शहर होते हैं जो आर्थिक रूप से स्थायी समाज के अनुरूप पर्यावरण को बनाये रखते हैं। ये शहर पर्यावरण को क्षति नहीं पहुँचाते हैं तथा पर्याप्त रूप से ऊर्जा का संवर्धन, प्रदूषण रहित, प्राकृतिक संसाधनों का बचाव वहाँ रहने वाले व्यक्तियों के उच्च जीवन स्तर को बनाये रखने में मदद करता है। जैसे—ताज पारिस्थितिक शहर एवं कोट्टयम पारिस्थितिक शहर।

पारिस्थितिक पर्यटन

इस पर्यटन के अन्तर्गत प्राकृतिक पर्यावरण संरक्षण का पूरा ध्यान दिया जाता है जिसके माध्यम से वहाँ के पर्यावरण को पर्यावरण मूल्यों एवं सतत् विकास के सिद्धान्तों को मदद मिलती है। केरल ऐसा पहला राज्य है, जो इस मॉडल के आधार पर पारिस्थितिक पर्यटन का विकास कर रहा है।

सतत् विकास

सतत् विकास ऐसा विकास है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इस तरह किया जाता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण नहीं होने पाये। इसमें संसाधनों का उपयोग इस तरह किया जाता है, कि पर्यावरण को किसी तरह की क्षति ना हो।

राइपेरियन राज्य

वे राज्य जिनके अन्तर्गत नदी का अपवाह क्षेत्र फैला होता है। राइपेरियन राज्य कहलाते हैं जैसे—कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी कोवरी नदी के राइपेरियन राज्य हैं।

टेलीमेडीसिन

संचार तकनीक, सूचना प्रौद्योगिकी और मेडिकल प्रौद्योगिकी का ऐसा समन्वित आर्थिक एकीकरण जिसको उद्देश्य मेडिकल क्षेत्र को जनसाधारण तक पहुंचाना है। यही *टेलीमेडिसन* कहलाता है।

बाघ परियोजना

सरकार द्वारा 1973 में प्रारम्भ की गयी बाघ परियोजना के अन्तर्गत 17 राज्यों में बाघ संरक्षित क्षेत्र बनाने के लिए तथा उन क्षेत्रों को सुरक्षित बनाये रखने

के लिए आदिवासियों को स्वतन्त्र पुनर्वास के लिए वित्तीय सहायता बाघ परियोजना के मुख्य उद्देश्य हैं।

'गजसभा' या हाथी परियोजना

सरकार द्वारा 1992 में एशियाई हाथियों के संरक्षण के लिए हाथी पाये जाने वाले सभी राज्यों में इस योजना को लागू किया गया। इसके अन्तर्गत 11 हाथी संरक्षण क्षेत्र चिन्हित किये गये हैं।

शहरीकरण

व्यक्तियों के गाँव से शहर प्रवास करने के कारण उनके व्यवहार, आर्थिक सम्पन्नता तथा जीने के तरीकों में हुये परितर्वनों को शहरीकरण कहते हैं। इसका प्रभाव व्यक्ति के मूल गांव के व्यक्तियों पर भी पड़ता है।

डेज़र्ट मार्जिन प्रोग्राम

इस कार्यक्रम के अनुसार पर्यावरण संतुलन को बनाए रखते हुए न सिर्फ रेगिस्तान को बढ़ने से रोका जा सकता है बल्कि जैव विविधता एवं कृषि वानिकी के द्वारा मरू भूमि को दोबारा कृषि योग्य बनाकर कृषकों को लाभान्वित कर सकते हैं, साथ ही पर्यावरण संतुलन भी बना रहेगा।

फर्टिलाइजर माइक्रोडोजिंग

इस प्रक्रिया की खेती में उर्वरक बहुत ही सीमित एवं संतुलित मात्रा में और सही समय पर उपयोग किया जाता है। कृषक उर्वरक का माप कर उसे बीज के नजदीक ही डालते हैं।

शुष्क भूमि पर्यावरण कृषि

यह वृक्ष फसल पशुपालन का समन्वित कृषि कार्यक्रम है। इस प्रकार की खेती में तेज बढ़ने वाले वृक्षों को सलाना फसल के साथ उगाया जाता है, परंपरागत कृषि के मुकाबले इस प्रकार की कृषि में दोगुनी से ज्यादा आमदनी होती है।

फंक्शनल फूड

ये इस तरह के भोज्य पदार्थ हैं जो पौष्टिक आहार के साथ-साथ शरीर को सेहतमंद रखने में भी सहायक होते हैं।

अहिंसा रेशम

इस प्रकार की रेशम खेती में रेशम का कीड़ा गुच्छे के अंदर मरता नहीं है एवं बाहर आ जाता है। इस प्रक्रिया में रेशम के रेशे तो कुछ टूट जाते हैं परंतु कीड़े (पादप) की जान बच जाती है। हालांकि इस तरह की रेशम खेती महंगी होती है परंतु काफी हद तक अहिंसात्म भी।

केन्द्रीय प्रायोजित परियोजना

किसी कार्य विशेष को ध्यान में रखकर बनाई गई परियोजना जिसके क्रियान्वयन का वित्तिय भार केन्द्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है। इनमें वित्तिय सहायता केन्द्र द्वारा सीधी जिला एवं पंचायत स्तर को प्रदान की जाती है, वर्तमान में ऐसी करीब 150 परियोजनाएँ क्रियांवित हैं।

जैविक कृषि

इस प्रकार की कृषि में मानव निर्मित रसायनों का प्रयोग उर्वरक या खरपतनाशक आदि के रूप में बिल्कुल वर्जित है। इस प्रकार की खेती में फसल की पैदावार जैविक खाद एवं क्राप रोटेशन पर आधारित होती है।

साक्षरता

साक्षरता महज ऐसे साक्षरों के प्रतिशत को नहीं जोड़ती जो सिर्फ पढ़ना-लिखना जानते हो परंतु ऐसे नागरिक जो राष्ट्र की औद्योगिक या सेवा इकाई में किसी भी प्रकार की उपयोगिता दे रहे हों। जैसे—मार्केटिंग, डिज़ाइनिंग एवं प्रोसेसिंग आदि।

ग्रीन बिल्डिंग

इस प्रकार की इमारत जहाँ प्राकृतिक रूप से उपलब्ध रोशनी, जल एंव अन्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का प्रकृति के अनुरूप बेहतर उपयोग होता है। इसका उद्देश्य की, इमारत का डिजाइन एवं निर्माण इस तरह हो कि मनुष्य प्रकृति से जुड़ा महसूस करे एवं सेहतमंद रहे।

ट्रक फार्मिंग

इस प्रकार की कृषि जहाँ फल, सब्जी आदि उगाए जाते हों, जिन्हें जल्दी बाजार तक पहुँचाना जरूरी होता है वर्ना पदार्थ के खराब होने का भय रहता है।

दून

सपाट सतह आकार की घाटियाँ जो शिवालिक एवं हिमालय पर्वत श्रेणी के मध्य पाई जाती हैं। यहाँ घने जंगल पाए जाते हैं एवं सघन कृषि होती है। उदारहण—देहरादून।